जुलूस

चित्रा मद्गल

HSSLiVE.IN

सारांश:-

नेपथ्य में अंग्रेज़ देश छोडो नारे बुलंद करते हुए स्वतंत्र सेनानियों का जुलूस आ रहा है। भारत माता की जय कर रहे है।

सड़क के पास के बाज़ार में दूकानदार शंभुनाथ और दीनदयाल बहस कर रहे थे। नारे सुनकर शंभुनाथ व्यंग्यभरी स्वर में कहते है कि सब लोग काल के मुँह में जा रहे है, आगे जो पुलिस सवारों का दल है, मार-मार कर भगा देगा। दीनदयाल हँसी उठाते हैं कि जुलूस के द्वारा कैसे स्वतंत्रता मिलेगी, गाँधीजी भी अब बूढा हो गया है, धनी लोग तो जुलूस में भाग नहीं लेते। इसलिए हम जैसे व्यापारी लोग इसमें भाग लेने की आ वश्यकता नहीं है।

बाज़ार में चप्पलों का व्यापार करनेवाला मैकु इन बातें सुनकर हँसते है कि धनी लोगों को अंग्रेज़ी शासन में कोई कमी नहीं है। वे तो बंगलों में रहनेवाले हैं। हमारे नेता गाँधीजी है। देश की स्वतंत्रता केलिए अपना जान भी देनेवाले उसके आगे किसी भी बडा आदमी नहीं।

इतने में दारोगा बीरबल सिंह के नेतृत्व में सिपाहियों ने जुलूस को रोक दिया। घोडेवाले दारोगा ने उसे वापस लौट जाने को कहा। लेकिन इब्राहिम अली के नेतृत्व में स्वराजियों ने कहा कि -हम कोई लूटने केलिए नहीं आए हैं, हमारा लक्ष्य पूर्ण स्वतंत्रता है। डी. एस. पी साहब के निर्देश का पालन करने केलिए लाठी चार्ज शुरु किया। कई स्वाराजियों घायल हो गए। इब्राहिम अली घोडे से कुचल गए, उसके सिर पर गहरी चोट लगी और वह बुरी तरह घायल हुए।

शहर में संघर्ष आरंभ हुआ। देशप्रेम से प्रभावित मैकु, शंभुनाथ, दीनदया आदि जुलूस में भाग लिया। उमडती चली आ रही भीड़ को देखते ही डी. एस. पी साहब चल गए। साथ ही बीरबल सिंह के नेतृत्व की सिपाहियों भी। लोगों की मनोवृत्ति में आया बदलाव देखकर इब्राहिम अली खुश हुए। उन्होंने बताया कि लड़ाई नहीं, जनता की सहानुभूति प्राप्त करना हमारा लक्ष्य है। इस प्रकार भारतीय एक साथ, एक ही मन से खड़ें तो कल स्वराज्य साकार हो जाएगा। सभी जोशीले स्वर में जय भारत माता कहते रहे।

अनुवर्ती कार्य:-

- **निम्नलिखित कथन किस पात्र का है?**
  - हमें किसीसे लड़ाई करने की ज़रूरत नहीं। — इब्राहिम अली
  - हमारा हुक्म क्या आपको सुनाई नहीं पड़ा। — बीरबल सिंह
  - जुलूस निकालने से स्वराज मिल जाता तो कबका मिल गया होता। — **दीनदयाल**
  - हमारा बड़ा आदमी तो वही है जो लंगोटी बाँधे नंगे पाँव घूमते है। — मैकु
  - एक दिन तो मरना ही है, जो कुछ होना है हो। — शंभूनाथ
  - मर तो हम लोग रहे जिनकी रोटियों का ठिकाना नहीं। — मैकु
  - हमारा मक़सद इससे कहीं ऊँचा है। — इब्राहिम अली
- **निम्नलिखित कथन इब्राहिम अली के चरित्र की किन-किन विशेषताओं को उजागर करता है?**
  - हम दूकानों लूटने या मोटरों तोड़ने नहीं निकले हैं। (अहिंसावादी)
  - आप अपने सवारों, संगीनों और बंदूकों के ज़ोर से हमें रोकना चाहते है- रोक लीजिए! मगर आप हमें लौटा नहीं सकते। (साहसी, निड़र)
  - हमारे भाईबंद ऐसे हुक्मों की तामील करने से साफ़ इनकार कर देंगे। (देशप्रेमी)

♣ जिस दिन हम इस लक्ष्य पर पहुँच जाएँगे, उसी दिन स्वराज्य सूर्य का उदय होगा। (आत्मविश्वासी)

- **उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर इब्राहिम अली के चरित्र पर टिप्पणी करें।**

HSSLiVE.IN

आदर्श देशप्रेमी इब्राहिम अली

कहानी सम्राट श्री प्रेमचंद की कहानी का नाट्यरूपांतर है, चित्रा मुद्गल का जुलूस। यह भारत की स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित भावपूर्ण आदर्शात्मक कहानी है। स्वतंत्रता आंदोलन के उन्नायक इब्राहिम अली, दारोगा बीरबल सिंह, पत्नी मिट्ठनबाई आदि इस कहानी के प्रमुख पात्र है। इसके अतिरिक्त मैकु, शंभुनाथ, दीनदयाल जैसे कुछ पात्र भी है, जो अपनी-अपनी भूमिकाओं में कहानी को आगे खींचते है।

इब्राहिम अली देश केलिए समर्पित **आदर्श देशप्रेमी** था। देश की स्वतंत्रता केलिए जनता को एकत्रित करके अंग्रेज़ों के विरुद्ध आवाज़ उठाते है। इब्राहिम अली गाँधीजी से प्रभावित है। गाँधीजी की तरह वह **अहिंसा मार्ग** को स्वीकार किया। हम दूकानों लूटने या मोटरों तोड़ने नहीं निकाले है- इस कथन से अहिंसा के तत्व का स्पष्ट प्रभाव विद्यमान है।

इब्राहिम अली **साहसी** एवं **निड़र** है। बीरबल सिंह ने अंग्रेज़ी सेना के बल पर जुलूस को आगे जाने से रोका। लेकिन इब्राहिम अली के नेतृत्व में वे लौट न गए।

इब्राहिम अली अपने **साथियों पर भरोसा रखनेवाला** है। उनको पूर्ण विश्वास था कि एक दिन जनता एक साथ स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेगा। अंत में उनके घायल होने की बात सुनते ही जनता एक साथ जुलूस में शामिल हुए। वे मानते है कि लोगों की मनोवृत्ति में आया परिवर्तन ही उनका असली विजय है।

इब्राहिम अली **दृढचित्त** थे। बीरबल सिंह की आज्ञा के आगे वे अपना सिर झुकने केलिए तैयार नहीं। अंत में घोडे से कुचलकर गिरते समय तक अपने लक्ष्य से ज़रा भी पीछे न मुड़ा।

देश को पराधीनता से मुक्त कराना उनका लक्ष्य रहा। वे **शुभचिंतक** थे। उनको विश्वास था कि एक दिन स्वराज्य सूर्य का उदय होगा और हम अपने लक्ष्य तक पहुँचेगा।

देश की स्वतंत्रता केलिए वह **आत्मबलिदान** किया। इस आत्मबलिदान जनता के दिल में राष्ट्रीय भावना का बीज बोता है, देश प्रेम की लहरें उठाता है।

इब्राहिम अली

- देशभक्त
- अहिंसावादी
- दृढ़चित्त
- शुभचिंतक
- निड़र
- आत्मविश्वसी
- साथियों पर भरोसा रखनेवाला

नाटक के अन्य प्रमुख पात्रों के चरित्र चित्रण:-

(1) अंग्रेज़ी दास-दारोगा बीरबल सिंह

कहानी सम्राट श्री प्रेमचंद की कहानी का नाट्यरूपांतर है, चित्रा मुद्गल का जुलूस। यह भारत की स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित भावपूर्ण आदर्शात्मक कहानी है। स्वतंत्रता आंदोलन के उन्नायक इब्राहिम अली, दारोगा बीरबल सिंह, पत्नी मिट्ठनबाई आदि इस कहानी के प्रमुख पात्र है। इसके अतिरिक्त मैकु, शंभुनाथ, दीनदयाल जैसे कुछ पात्र भी है, जो अपनी-अपनी भूमिकाओं में कहानी को आगे खींचते है।

बीरबल सिंह भारतीय होकर भी **अंग्रेज़ी सरकार का दास** था। स्वतंत्रता आंदोलन ज़ोरों पर था। दारोगा भारतीय होकर भी आंदोलन के विघातक के रूप में खडा था। उसके नाम सुनते ही जनता काँप उठते हैं। लोग उसे **'जल्लाद'** बुलाते थे।

बीरबल सिंह बडे **देश द्रोही** थे। भारतीय होकर भी हमेशा स्वतंत्रता आंदोलन के विध्वंसक रहा।

बीरबल सिंह **निष्ठूर** और **निर्दय** था। अपने सिपाहियों से लाठी चार्ज करने का आदेश देता है और स्वतंत्रता आंदोलन के उन्नायक इब्राहिम अली के ऊपर घोडा चढ़ाते थे।

वह अंग्रेज़ी सरकार का **आज्ञाकारी** थे। अंग्रेज़ी सरकार की कृपा पाने केलिए वह स्वदेशी आंदोलन तो समाप्त करने का उपाय सोच रहा था।

बीरबल सिंह **भीरु** थे। डी.एस.पी साहब के चले जाने की खबर सुनते ही वह अपने सिपाहियों को पीछे हटाने की आज्ञा देता है और स्वयं पीछे हटाते हैं।

बीरबल सिंह:-

- देश द्रोही
- निष्ठूर
- अंग्रेज़ी सरकार के आज्ञावारी
- भीरू
- निर्दय

(2) शंभूनाथ:-

कहानी सम्राट श्री प्रेमचंद की कहानी का नाट्यरूपांतर है, चित्रा मुद्गल का जुलूस। यह भारत की स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित भावपूर्ण आदर्शात्मक कहानी है। स्वतंत्रता आंदोलन के उन्नायक इब्राहिम अली, दारोगा बीरबल सिंह, पत्नी मिट्ठनबाई आदि इस कहानी के प्रमुख पात्र है। इसके अतिरिक्त मैकु, शंभुनाथ, दीनदयाल जैसे कुछ पात्र भी है, जो अपनी-अपनी भूमिकाओं में कहानी को आगे खींचते है।

शंभुनाथ एक दूकानदार है, जो सड़क के ओर की बाज़ार में दूकान चलाती है। स्वतंत्रता आंदोलन ज़ोरों पर था। दृश्य में शंभुनाथ, आस-पास के दूकानदारों से बहस कर रहे हैं। इनकी वाणी और भाव देखकर ऐसा लगता है कि उनमें देश प्रेम नहीं है। दूर से स्वराजियों के जुलूस में 'भारत माता का जय हो', 'अंग्रेज़ों भारत छोडो', जैसे नारें सुनते ही उनके मन में परिहास उठती है। व्यंग्य भरी शब्दों में वह, पास की दूकानदार से कहते हैं कि ये सब लोग काल के मुँह में जा रहे हैं। उसको भारतीयों पर व्यंग्य है और कभी-कभी ऐसा लगता है कि वह अंग्रेज़ी सरकार का दास है। उनको पूरा विश्वास था कि अंग्रेज़ी सरकार और उनके पुलिस सिपाही इन स्वराजियों को मार-मार कर भगा देगा।

इब्राहिम अली के नेतृत्व में जुलूस आगे बढ़ रहा था। बीरबल सिंह ने अंग्रेज़ी सेना के हथियारों का खूब प्रयोग किया। इब्राहिम अली का सिर फट जाते है तो सभी स्वराजियों में देशप्रेम जागृत हो उठती है। बाज़ार के सभी दूकान बंद करते है, शंभुनाथ भी अपने दूकान को बंद करने में विवश

पडती है। उसकी विवशता इन शब्दों में व्यक्त होती है- 'पूरा बाज़ार बंद हो रहा.... मैं कैसे अपनी दूकान खुल रख सकती हुँ?' आगे की उनकी स्वरों में एक निड़र देशस्नेही गूँज उठती है कि वे कहते हैं 'एक दिन तो मरना ही है....'।

पहले स्वतंत्रता आंदोलन के विरोध में व्यंग्य भरी आवाज़ उठाकर आगे चलकर शंभुनाथ एक असल देशप्रेमी बनते है।

HSSLiVE.IN

(3) <u>मैकू:-</u>

कहानी सम्राट श्री प्रेमचंद की कहानी का नाट्यरूपांतर है, चित्रा मुद्‍गल का जुलूस। यह भारत की स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित भावपूर्ण आदर्शात्मक कहानी है। स्वतंत्रता आंदोलन के उन्नायक इब्राहिम अली, दारोगा बीरबल सिंह, पत्नी मिट्‍ठनबाई आदि इस कहानी के प्रमुख पात्र है। इसके अतिरिक्त मैकु, शंभुनाथ, दीनदयाल जैसे कुछ पात्र भी है, जो अपनी-अपनी भूमिकाओं में कहानी को आगे खींचते है।

मैकु एक दरिद्र दूकानदार था, जो बाज़ार में चप्पलों का एक दूकान चलाता था। स्वतंत्रता आंदोलन ज़ोरों पर था। दृश्य में बाज़ार में दूकानदार बहस कर रहे हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के नारे सुनकर दीनदयाल और शंभूनाथ जैसे दूकानदारों में हँसी-मज़ाक उठाती है। लेकिन मैकू आरंभ से ही स्वतंत्रता आंदोलन के अनुयायी रहे। वे स्पष्ट कहते हैं कि बड़े आदमी सुरक्षा से महलों में रहते है, मोटरों में घूमते है। लेकिन यहाँ हम जैसे आम जनता की रोटियों का कोई प्रबंध नहीं है। इन शब्दों में उनकी दरिद्रता व्यक्त होती है।

मैकू गाँधीजी के अनुयायी है। गाँधीजी पर उन्हें पूरा विश्वास है कि भारतीयों की दशा सुधारने केलिए वह अपनी जान हथेली पर लेकर नंगे पाँव घूमता है। गाँधीजी के आगे कोई भी बड़ा आदमी नहीं है।

इब्राहिम अली के नेतृत्व में जुलूस आगे बढ़ रहा था। बीरबल सिंह ने अंग्रेज़ी सेना के हथियारों का खूब प्रयोग किया। इब्राहिम अली का सिर फट जाते है तो सभी स्वराजियों में देशप्रेम जागृत हो उठती है। बाज़ार के सभी दूकान बंद होती है। मैकू ही सबसे पहले अपने दूकान का शटर गिराकर जुलूस में शामिल होने केलिए तैयार होती है। अपने सह-दूकानदारों को अपने दूकान बंद कराने की प्रेरणा भी देती है।

नाटक में आद्यंत मैकू एक सच्चे देशप्रेमी है, गाँधीजी के अनुयायी थे। वह अपने पास की दूकानदारों को देशप्रेमी होने की प्रेरणा भी देती है।

जीवन-वृत्त पढ़ें।

नाम	: चित्रा मुद्गल
जन्म	: 10 दिसंबर 1944 , चेन्नै (तमिलनाडु)
रचनाएँ	: उपन्यास - आवाँ, गिलिगडु, एक ज़मीन अपनी कहानी - भूख, पेंटिग अकेली है नाटचरूपांतर – जुलूस, बूढ़ी काकी, सद्गति
विशेषताएँ	: बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभा नारी-उत्पीड़न के विरोधी
देन	: उपेक्षित एवं उत्पीड़ित भारतीय नारी केलिए समर्पित साहित्य
पुरस्कार	: व्यास सम्मान, इंदुशर्मा कथा सम्मान आदि।

HSSLIVE.IN

चित्रा मुद्गल के बारे में एक अनुच्छेद लिखें।

चित्रा मुद्गल

चित्रा मुद्गल का जन्म 10 दिसंबर 1944 को तमिलनाडू के चेन्नै जिले में हुआ। आवाँ, गिलिगडु, एक ज़मीन अपनी, भूख, पेंटिग अकेली है , जुलूस, बूढ़ी काकी, सद्गति आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी चित्रा मद्गल नारी-उत्पीड़न के सशक्त विरोधी भी थे। उपेक्षित एवं उत्पीड़ित भारतीय नारी केलिए समर्पित साहित्य आपकी महत्वपूर्ण देन है। व्यास सम्मान, इंदुशर्मा कथा सम्मान आदि पुरस्कार से भी आप सम्मानित है।

HSSLIVE.IN

DO NOT COPY